गुरु को पहचानना कैसे ?

ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीरराघव राव

गुरु को पहचानना कैसे ?

लेखक : श्री तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्री नागेश्वर राव

For Books Please Contact :
TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.50/-

सूची

1. गुरु को पहचानना कैसे ? 3

2. गुरु का मतलब ? 4

3. गुरुओं किन प्रकार के हैं ? 7

4. गुरु के बारे में । 11

5. आश्रमों । 13

6. गुरुओं के प्रकारों । 14

7. शिष्य का मतलब, क्या होता है ? 21

8. गुरुओं का क्रोध । 24

अनुबंध ।

पत्रीजी का संदेशों । 27

1. गुरुओं हर वक्त रहते हैं । 28

2. गुरु और लघु 29

3. ‘अंध भक्त – शिष्य’ 30

4. ‘गुरु – परम गुरु’ 31

गुरु को पहचानना कैसे ?

जैसे दक्षिणामूर्ति ने सनक सनंद नादों को मौन से ही ज्ञानोदय कर कर आत्मानंद दिया, गुरु, आत्मज्ञान के द्वारा, शुद्ध चैतन्य परम ब्र्म्ह का साधक बना सकता है ।

मुमुक्षु लोग, सागर में मोती के सीप जैसे लोग हैं, और गुरु उनमें उस सीप में प्रवेश करने वाला , स्वाति नक्षत्र का बारिश का बूंद जैसा है।

बारिश के एक बूंद से प्यास बुझता है । लेकिन समुद्र का नमकीन पानी से क्या फायदा? इसलिए गुरु, बारिश का पानी जैसा है ।

गुरु का अर्थ ?

पहले हम 'गुरु' शब्द का अर्थ जानते हैं ।

1. 'गु' का मतलब अंधकार , और 'रु' का मतलब ज्योति स्वरूप। अंधकार मतलब अज्ञानता को मिटाने वाली ज्योति स्वरूप ही है, गुरु। इसका दूसरा अर्थ भी है ।

2. 'गु' का मतलब गुणातीत और 'रु' का मतलब रूप रहित। गुरु गुण और रूप रहित परब्रम्ह के स्वरूप है ।

इसका एक और अर्थ भी है।

3.'गु' का मतलब अज्ञान और 'रु' का मतलब ज्ञान। अज्ञानता को मिटाकर ज्ञान बांटने वाला है, गुरु का अर्थ ।

उत्तम गुरु का अर्हतायें।

1. गुरु, ज्ञानी होना चाहिए। ज्ञान का मतलब विषय का परिज्ञान। केवल पांडित्य नहीं, स्वयं प्रतिभा और प्रज्ञा होना चाहिए।

2. गुरु, कर्मिष्ठ होना चाहिए। मतलब कर्मो करता रहना चाहिए, बल्कि सन्यास या विरागी नहीं होना चाहिए।

3. गुरु, ध्यान तत्परइत योगी होना चाहिए। मतलब कर्मयोगी, बिना प्रतिफल अपेक्षा होना चाहिए ।

जो भाषणों देकर, दिखावटी कपड़े पहनने वाले, अपने आप को अवतार पुरुष कहकर जीने वाले, सद्गुरु नहीं हो सकते हैं ।

इसलिए, गुरु, स्वयं साधक होना चाहिए। साधना में कष्ट और सुख को अनुभवी, होना चाहिए । ब्रम्हा अनुभूति होना चाहिए। प्रज्ञा शाली होना चाहिए। ऐसे गुरु ही दूसरों को मार्गदर्शन दे सकता है, दूसरों

को सही रास्ता दिखा सकता है ।

ऐसे गुरु महात्मा होना चाहिए, करुणा मूर्ति होना चाहिए । उनका अंतरंग करुणा रस प्लावित होना चाहिए। अपनी शक्ति से शिष्यों का भव-बंधों को छुड़ा सकना चाहिए ।

ऐसे गुरु ही ज्ञान निधि, तत्व निधि है। क्योंकि ज्ञान, आत्मज्ञान जितना भी बांटते रहते हो, वह घटता नहीं। ऐसे सत्य को जानने वाला ही, गुरु है।

कोई भी तात्विक विषयों को बिना हिचकिचाए, और सोच कर, विवरण देना चाहिए। उसको ऐसी बातों को पहले नहीं जानते होंगे, लेकिन उसी वक्त उनका स्फुरण में आना चाहिए। वही प्रज्ञा है।

गुरु का अनुभव ज्ञान और प्रत्यक्ष ज्ञान है। इससे अधिक ज्ञान, इस लोक में ना शास्त्र पठन से मिलेगा ना ही पांडित्य से मिलेगा। इसीलिए कहते हैं कि अनुभव से बड़ा कोई प्रमाण नहीं है। गुरु अनुभव से बताते हैं। शास्त्र हर बार प्रमाण नहीं है। जब शास्त्र प्रमाण शिष्य को अनुभव में नहीं आता है, उसको छोड़ना है। तब गुरु का अनुभव ही प्रमाण है। गुरु का अनुभवी ज्ञान से बोधित विषयों को समझ कर, उनके आदेश अनुसार चलना चाहिए। ऐसे ही गुरु का दिया हुआ साधना कर कर, जन्म परंपरा से विमुक्ति पा सकते हैं।

हम लोग पुण्य और पुरुषार्थ के लिए समुद्र स्नान, नदी स्नान करते रहते हैं। मंदिरों में जाना, पुष्करों में स्नान करना और विग्रह का दर्शन करते हैं। हमें, यह जानना है की जितना पुण्य सप्तसागरों में, पृथ्वी पर नदियों में स्नान करने से मिलती है, उससे, आत्म विकास अधिक बेहतर है। वह सिर्फ सद्गुरु से ही होगा।

वेदों को आगे से पीछे तक, या पीछे से आगे तक, कंठस्थ करने वाले घणापाठी या उपनिषदों को कंठस्थ करने से या बड़े उपन्यासों देने से, ज्ञान नहीं मिलेगा । और काषाय वस्त्र पहनकर, सिरो मुंडन कर कर, मठों में रहने से कोई फायदा नहीं है ।

यही विषय को, श्री शंकराचार्य जी , ने कहा है कि,

जटिलो मुंडी लुंचित केशः
काषायांबर बहु कृत वेशः ।
पस्यन्नपि चन या पश्यति माड़ो
उदरनिमित्तं बहु कृत वेशः । ।

तात्पर्य : बालों को चोटी बांधकर, सिर को मुंडन करना, काषाय वस्त्र पहनना, यह सारे सिर्फ पेट भरने के लिए कुछ वेशभूषा है, लेकिन ज्ञानोदय के लिए प्रयत्न नहीं है।

सत्यमय ब्र्म्मा, सिर्फ मानस को पार करने के बाद ही प्रस्तुत होता है। मानस के साथ, उनका नहीं पहचानेंगे । ब्र्म्म का अर्थ, भगवान। वह निर्गुण, निरामय , निरंजन है। इसलिए जानने के लिए सिर्फ ज्ञान काफी नहीं है, प्रज्ञा की जरूरत है । वह सिर्फ सद्गुरु से ही होगा। उसका दिया हुआ साधना से ही होगा ।

जैसे अंधा, सूर्योदय को नहीं देख सकता है , एक मूर्ख, गुरु का रूप, और तत्व को नहीं समझेगा । बहुत लोग न केवल अज्ञानता से , बल्कि अहंकार से भी, गुरु से दूर हो जाते हैं।

एक साधक को रूप ध्यान छोड़कर , अरूप स्थिति पहुंचकर, निर्गुणोपासन कर कर, रूपातीत परब्र्म्म तत्व को जानने के लिए, गुरु का सहकार जरूरी है । इसलिए सद्गुरु का आश्रय लेना है।

हकीकत में गुरु हमें कुछ उपदेश नहीं देता, हम क्या है, हमें याद दिलाता है, आंखें खोलता है, और 6 कुछ नहीं ।

गुरुओं किन प्रकार के हैं ?

सब लोग जो बोध करते हैं, वह सब गुरु ही हैं, लेकिन वह अलग-अलग स्तर के होते हैं। शास्त्रों में, गुरुओं को, सात प्रकार में विभाजन किया हैं।

1. सूचक गुरु :- जो लौकिक प्रपंच का विद्या सिखाते हैं।

2. वाचिक गुरु :- जो वर्णाश्रम के विषयों पर बोध करते हैं। धर्म और अधर्म का बोध करते हैं ।

3. कुल गुरु :- पंचाक्षरी मंत्र और आदि उपदेश करने वाले हैं। वह मत संप्रदाय को भी बोध करते हैं ।

4. निषिद्ध गुरु :- जो भूत, प्रेत, पिशाचों, काला जादू, आदि का मंत्र उपदेश देते हैं ।

5. विहित गुरु :- संसार अनित्य है कि बोध कर कर, उनको बैरागी मार्ग दिशा करते हैं ।

6. कारण गुरु :- "अहम ब्र्स्मास्मि", "तत्वमसी", जैसे महा वाक्य बोध करते हैं और दुख निवारण मार्ग बोध करते हैं ।

7. परम गुरु :- समस्त संशयाओं को दूर कर कर, मौत का डर निकाल कर, जो संसार बंधन से विमुक्त पाने का मोक्ष मार्ग दिखाते हैं।

यह परम गुरुओं ने आध्यात्मिक शिखर पहुंच चुके हैं। यह लोग महाज्ञानी है, महायोगी है, लेकिन इस लोक में सामान्य जीवन बिताते हैं। उनका महानता को दिखाते नहीं हैं। वह प्रचार भी नहीं करते हैं । हर वक्त लोक कल्याण के लिए ही काम करते हैं। हम अपने अनेक जन्मों में पुण्य

की फल से हमें परम गुरु प्राप्त होता है। ऐसे लोग परम गुरु को प्राप्त करने के बाद दोबारा संसार की बंधन में नहीं पढ़ते हैं । इसलिए परम गुरु को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए ।

सारे गुरुओं सर्वज्ञ नहीं है। ब्र्म्मा अनुभूति भी नहीं होते हैं। उनमें अज्ञानी भी होते हैं। झूठ बोलने वाले भी होते हैं । वह सब नाटक करते है कि वह सब जानते हैं । अपने आप को प्रशंसा करते हैं। करण जन्म बताते हैं। वह दूसरों को कुछ सिखाते नहीं है। ऐसे गुरुओं से कोई फायदा नहीं है।

जैसे नदी पार करने के लिए शिला का आश्रय थोड़ी लेते हैं ? शिला के सहारे नदी को पर नहीं कर सकते हैं। इसी तरह बिना अनुभवों का गुरु से कुछ भी फायदा नहीं है। वह कैसे दूसरों को बोध कर सकते हैं ? इसलिए अयोग्य और अहम्भावी गुरुओं को छोड़ना सही है। वेश धारण कर कर भगवा वस्त्र पहनकर अपने आप को परिशुध्द होने का नाटक करते हैं। ऐसे गुरुओं को दिखावटी कहते हैं और उनसे सावधान रहना चाहिए ।

अगर उनको साष्टांग नमस्कार नहीं करेंगे तो, कुछ गुरुओं को क्रोधित होते हैं। उनका शोर, भेड की गंभीरता जैसे ही है। ऐसे लोगों से शिष्यों को आध्यात्मिक प्रगति नहीं होगा बल्कि कष्ट और नष्ट भी हो जाएगा । इसलिए गुरु को चुनने से पहले ही सावधान होना चाहिए । कोई भी उत्तम गुरु, शिष्यों होने को नहीं बुलाता हैं। एक साधक ही गुरु को चुनना है।

एक सद्गुरु उपनिषदों का ज्ञान बोध करता है। ध्यान साधना द्वारा, ज्ञान को उनके अनुभव में लाते हैं।

अगर गुरु कृपा है तो ?

सद्गुरु शिष्य को स्वीकारने के बाद उनको ज्ञानी बनने के लिए, कई प्रकारों कोशिश करते हैं। और शिष्य को अपनी तरह बनाने के लिए भी प्रयत्न करता है। इसके लिए चार प्रकार दीक्षितों द्वारा कोशिश करता है।

1.दृक दीक्षा, 2.स्पर्श दीक्षा, 3.वॉक दीक्षा, 4.मनो दीक्षा

1.दृक दीक्षा :- इसी को मीन न्याय कहते हैं। मछली अंडे को रखकर पीछे मोड़कर उसके अंडे को तीव्र दीक्षा से उनकी तरफ देखती है और मां का नजर से ही वह अंडे बच्चे बन जाते हैं।

इसी प्रकार एक सद्गुरु का करुणामृत नजर से शिष्य को ज्ञानी बन जाता है। तब से अज्ञानता का जीवन छोड़कर, ज्ञानी जीव होकर, आत्मा का दर्शन करता है।

2. स्पर्श दीक्षा :- इसी को विहंग न्याय कहते हैं । एक पक्षी अंडे छोड़कर अपने पंक्ति के स्पर्श से उसके अंडे को पक्षी बनाती है। इसी तरह एक सद्गुरु अपने दिव्य वरद अभय हाथ के स्पर्श द्वारा शिष्यों को आत्मज्ञान देता है।

3. वॉक दीक्षा:- इसी को भ्रांत कीटक न्याय की तरह, न्याय कहते हैं। एक बर्रे एक कीटक को लाकर अपने छोटी सी घोंसला में रखकर, उसके द्वार में शब्द देता है। उसको देखते देखते बर्रे में बदलता है, और मकरंद स्वीकारता है। इसी तरह सद्गुरु अपने मृदु, मधुर वाक्यों द्वारा बोध करता है, और शिष्यों को अपने जैसे बनाते हैं।

4. मनो दीक्षा :- इसको कछुआ भावना कहते हैं। एक कछुआ एक जगह

अपने अंडे छोड़ता है। जब बादलों का गर्जन सुनते ही, कछुआ ने एक संकल्प करती है कि उसने एक जगह अंडे छोड़ा है और इन बादलों का गर्जन से उसके अंडे बच्चे होना चाहिए। इस संकल्प शक्ति से उसके अंडे बच्चे हो जाते हैं।

इसी प्रकार शिष्यों जहां भी हो, गुरु का दिया हुआ विद्या को श्रद्धापूर्वक साधना करता है। तब वह परब्र्ह्म ज्ञान प्राप्त करने का अर्हत प्राप्त करता है। ऐसे शिष्य जल्दी ही परमार्थ प्राप्त करने के लिए एक गुरु संकल्प करता है। इस संकल्प शक्ति से शिष्य विकसित होकर, परमार्थ मिलता है ।

जैसे सूर्य की किरणों को स्पर्श करते ही पद्मों विकसित हो जाते हैं, गुरुदेव की करुणा मिलने से ही, वेदों, उपनिषदों का ज्ञान और सुधाओं, एक शिष्य को प्राप्त हो जाता है।

इसलिए एक शिष्य गुरु का आश्रय लेना और उसकी कृपा के प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। जीवन को धन्य बनाना चाहिए ।

गुरु के बारे में ।

ज्ञान का मतलब जो नहीं है का जानना नहीं, बल्कि जो है, उसके बारे में जानना।

क्यों जानना है जो है ? क्योंकि आपको मालूम नहीं है कि वह है, और उसको भूल गया हो। जो भूला हुआ विषय, चीखने से नहीं मिलेगा या ढूंढने से नहीं मिलेगा । तब कैसे मालूम होगा? दूसरों ने आपको याद दिलाने से ही होगा? और कौन याद दिलाएगा? सिर्फ एक गुरु ही याद दिला सकता है।

यह गुरुदेव कैसे होना चाहिए? पहले उसको शास्त्रों के बारे में जानकारी होना चाहिए। मतलब श्रोता होना चाहिए, मतलब श्रुतों का ज्ञाता होना चाहिए, और उस ज्ञान का पाचन करते हुए, अनुभव होना चाहिए। और जो अनुभव और ज्ञान उन्हें प्राप्त किया है शिष्यों का स्थाई में आकर, उन को समझने वाला होना चाहिए। इसीलिए वह करुणा सागर होना चाहिए।

शिष्यों को ऐसे श्रुतीय ब्र्म्हा निष्ठ गुरु का आश्रय लेना और सेवा करना और ज्ञान प्राप्त करना चाहिए । ऐसे कर कर उन्नति प्राप्त करना है।

गुरु के बोध से, जो सत्य वास्तु के तलाश कर रहा है, वह अपने से अलग नहीं है, और वह सत्य वस्तु, 'आत्मा ' है, करके जानता है। जो इस आत्मा अनुभूति में शिष्य को रखेगा, वह गुरु, साक्षात भगवान ही है। ऐसे गुरु का ऋण, कोई भी चुका नहीं सकते हैं।

एक शिष्य को, अपने अंदर अज्ञान को, गुरु प्रसादित ज्ञान अग्नि में समिधों की तरह दग्ध होना, एक शिष्य का भावना रहता है। आजकल

गुरु - शिष्य का संप्रदाय समाप्त हो गया है। आजकल शिष्यों ने समिधों, मतलब वैराग्य के स्थान, दूसरों का शिकायतें लाते रहते हैं । गुरुदेव में ज्ञान अग्नि दर्शन न करते हुए, उनमें शोक अग्नि भरते हैं, और उन्हीं के ऊपर शासन करते हैं, गुरु कैसे होना चाहिए। जिस व्यवहार के लिए आए हैं, उसको भूलकर किसी बेकार की बातों में चर्चा करते रहते हैं ।

जो गुरु के पास आते हैं, एक शिष्य को साथ में अपना वैराग्य और गुरु भक्ति लाना चाहिए। गुरु के वचन में पूर्ण विश्वास होना चाहिए, जितना सुनते हो उतने को आचरण में लाना चाहिए, और आत्मा के अनुसंधान होना चाहिए।

ऐसे शिष्य को गुरु क्या बोध करता है? अगर वह जानना है , तब हमें गुरु महाराज का बोधों को जानना चाहिए ।

मेरे द्वारा प्रसादित आत्मज्ञान को स्वीकारो, ज्ञान के प्रति विश्वास रखकर, हर दिन एक घंटा का साधना करते हुए अपना जीवन बिताते हुए है, तब जो अपना शरीर को मल भंडार समझते हो, वह पवित्र देवालय बन जाएगा। ऐसे गुरु महाराज कहते हैं।

जिज्ञासु लोग, जो है उसकी निंदा करते हुए दुख नहीं होता। उन्हें क्या करना है? उनको एक-एक कमियों को साधना द्वारा निकालते रहने को, मनस को बोध करता रहना चाहिए। और साथ-साथ वासनाओं को क्षय करते करते, जीवन बिताना चाहिए ।

शरीर रहते हुए, समय को उपयोग कर कर जीने वाला, मानव व्यक्ति नहीं रहकर, अनंत शक्ति संपन्न बन जाएगा ।

आत्मा आराधना में अगर आत्मा, शक्ति बनेगा, तब व्यक्ति रहकर भी अनंत शक्ति संपन्न हो जाएगा ।

जो अपने पर आधारित है उसी को आत्मा कहते हैं। अपने प्रकाश को किसी और प्रकाश की जरूरत नहीं है, वही आत्मा है ।

उसी आत्मा, वस्तु प्रपंच को जानने के लिए, ज्ञान शक्ति देता है। वह हर समय मानव में ही प्रापित है। उसी को जानने के सिवाय मानव..... इस शरीर ही संसार, में रहकर, सारे वस्तुओं के मुद्रों को मन में रखकर, अंधकार को तैयार कर रहा है ।

मानव को उन सभी समूहों को निकाल कर, जाना चाहिए। शरीर भी एक वस्तु है। मानव को गुरुतंत्र से एक एक को निकालते हुए, शुद्ध चैतन्य स्थिति को पहुंचना है । ऐसे गुरु महाराज बोध करते हैं।

आश्रमों ।

संसार में मनुष्य कई प्रकार के जीवन विधान अनुसार करते हैं, चुनते भी है। उन्हीं को आश्रमों कहते हैं। पुराना जमाना में बड़ों ने चार प्रकार में विभाजन किए हैं ।

1. ब्रम्हचर्य आश्रम :- इसमें वेदों का अध्ययन करते हैं।

2. गृहस्थ आश्रम :- यहां दूसरों को बाटते हुए, खुद भी अनुभव करना ही, गृहस्थ आश्रम है।

3. वानप्रस्त आश्रम :- गृहस्थ आश्रम में तंग होकर स्वीकार करने वाला ही वानप्रस्त आश्रम है।

4. सन्यास आश्रम :- वैराग्य से आश्रम स्वीकारना ही सन्यास आश्रम है।

गुरुओं के प्रकारों ।

इस संसार से बना हुआ मन इस संसार का चीजों ही चाहता है, भगवान को जानने के लिए प्रयत्न नहीं करता है। और भगवान से भी हम सब, इस संसार के ही चीजों के लिए, प्रार्थना करते हैं ।

लेकिन जब मन का प्रभाव कम होता रहता है, संसार से ज्यादा, भगवान के बारे में, और उनका सृष्टि में कई प्रकार के लोकों के बारे में जानने के लिए उत्सुकित रहता है। इसी प्रकार, सिर्फ वही लोग के लिए होता है, जो ध्यान करते हैं। पिछले जन्मों में इस स्थाई तक पहुंचने वाला को ही होता है।

अगर देखेंगे तो हर कोई गुरु का आश्रय लेते हैं। लेकिन अपने चाहत की गुरु को आश्रित करते हैं। क्योंकि जो अपनी स्थिति के अनुसार वैसे गुरु का आश्रय लेते हैं।

इस संसार में बहुत प्रकार के गुरु हैं। इन गुरुओं को दो प्रकार के विभाजन कर सकते हैं। एक प्रापंचिक गुरु और दूसरा आध्यात्मिक गुरु ।

प्रापंचिक गुरुओं ने प्रापंचिक विषयों के लाभों पर बोध करते हैं। और आध्यात्मिक गुरुओं ने आध्यात्मिक विषयों पर और उनके लाभों के बारे में बोध करते हैं ।

लेकिन प्रापंचिक लाभों तत्कालीन है और दिखते हैं और आध्यात्मिक लाभों शाश्वत है और नहीं दिखते है। जो यहां दिखता है उसको इहम् और नहीं दिखने वाले लोकों को परम कहते हैं।

पहले प्रकार के गुरुओं ने मानव का इच्छाओं को पाने के लिए देवताओं को आश्रय लेने को कहते हैं। और देवताओं का महानता अनेक

प्रकार में वर्णन करते हैं ।

लेकिन दूसरी प्रकार के गुरुओं ने देवता कौन है, उनके बारे में जानकारी देकर, उस देवताओं को अपने ध्यान द्वारा आश्रय करने को कहते हैं। शाश्वत मुक्ति पाने के लिए कहते हैं।

अगर देखेंगे, इस संसार में तो, दो प्रकार के गुरु होते हैं। इसी प्रकार, दो प्रकार के बोधों भी दिखते हैं। यह सहज बात है कि कई युगों को बदलने के बाद भी, इन दो प्रकार के लोग होते ही रहते हैं ।

इसलिए अगर हमें जानना है कि हम किस स्थिति में हैं? इस दोनों प्रकार के बोधों में, हमें किस प्रकार के बोधों में आशक्ति हैं? हमें कौन सा पसंद है? उनमें किसको समझ पा रहे हैं ? किस प्रकार का बोध हम पर प्रभावित कर रहा है ? इन सब के ऊपर आधारित है। इसलिए हमें उनके बारे में और विषय जानते हैं।

1.पहले प्रकार गुरुओं, वह होते, जो अपने इच्छाओं को पूरी करने के लिए प्रयत्न करने वालों के तलाश में होते हैं, उनको बोध करते हैं ।

दूसरा प्रकार गुरुओं ने जो अपनी दुख से बाहर निकलने वालों को और मुक्ति चाहने वालों को बोध करते हैं, मतलब जो योग के अनुसार जीने चाहने वालों को ढूंढते हैं, बोध करते हैं।

2.इसी प्रकार पहले प्रकार के गुरुओं ने इच्छाओं को पूरी करने के मार्ग बोध करते हैं।

लेकिन दूसरा प्रकार के गुरु दुख निवारण के मार्ग बोध करते हैं।

3.पहले प्रकार का गुरुओं को, बोध, भुक्ति के लिए होता है। मतलब धन समुपार्जन, संपत्ति, भोग भाग्यों के लिए होते हैं।

लेकिन दूसरा प्रकार का गुरु का बोध भक्ति के लिए होता है। मतलब

दुख से, समस्याओं से, अपने वासनाओं से बाहर निकलने का बोध करते हैं। उस के लिए ध्यान करने को कहते हैं।

4.पहले प्रकार का गुरूओं ने देवताओं को पूजने का मार्ग बोध करते हैं।

लेकिन दूसरे प्रकार के गुरूओं ने देवताओं के पास पहुंचने का मार्ग बोध करते हैं। मतलब पूर्ण आत्मा को पहुंचने को बोध करते हैं। वही हमारा लक्ष्य है। तभी दुख से शाश्वत मुक्ति होंगे ।

5. पहले प्रकार का गुरूओं ने देवताओं का महत्व और महानता के बारे में बोध कर कर, उनसे मांगने को प्रोत्साहित करते हैं ।

लेकिन दूसरा प्रकार के गुरूओं ने उन देवताओं और उनके बोध के बारे में समझा कर, उनका आचरण में लाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

6. देवताओं ने आपका उत्थान करता है और आपको पापों को क्षमा करते हैं कहके, पहले प्रकार का गुरूओं बोध करते हैं।

लेकिन दूसरे प्रकार का गुरूओं ने बोध करते हैं कि, देवताओं ने आपको ना उत्थान करेंगे ना पापों को क्षमा करेंगे। अपने आप को उत्थान करना चाहिए, पापों नहीं करना है, और साधना करने को कहते हैं, सब को हासिल करने को बोध करते हैं।

7. पहले प्रकार का गुरूओं ने भगवान को रूप मानते हैं और उनका पूजा करने को बोध करते हैं।

लेकिन दूसरा प्रकार के गुरूओं ने आत्मा को ही भगवान कहकर, उनका ध्यान करने को बोध करते हैं ।

8.पहले प्रकार गुरूओं को मानने वाले शिष्यों, नकली भक्त हो जाते हैं , मतलब सिर्फ अपने इच्छाओं को पूरी करने के लिए, कष्ट से निकलने,

या धन प्राप्त करने के लिए, आराधना करते हैं।

लेकिन दूसरे प्रकार के गुरूओं को अनुसार करने वाले, हंस भक्तों के तरह बन जाते हैं। भगवान को इष्ट बन जाते है।

इसी विषय के बारे में भागवत गीता में कहा है,

श्लोकः **चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।**

आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ।। (भा.गी.7-16)

तात्पर्य : भारत वंश का श्रेष्ठ, हे अर्जुन, अपने आपदाओं में मुझे पुकारने वाले, धन प्राप्ति आशा करने वाले, भगवान को जानने को इच्छा रखने वाले, आत्मज्ञान होने वाले, चार प्रकार के भक्त मुझे सेवा करते हैं।

श्लोकः **तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।**

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ।। (भा.गी.7-17)

तात्पर्य : उनमें से जो नित्य परमात्मा, मतलब आत्मा, से जुड़ा रहता है, परमात्मा पर भक्ति होता है, वह ज्ञानी सबसे श्रेष्ठ है। ऐसे ज्ञानी को मैं पसंद हूं। और मुझे भी वह सबसे ज्यादा इष्ट है।

9.पहले प्रकार का गुरूओं कहते हैं कि भगवान अलग प्रदेश में रहता है। और उनसे आश्रित भक्तों को भगवान को आश्श्रय करने के लिए कई प्रकार मार्ग सूचना करते हैं।

दूसरा प्रकार गुरूओं ने कहते हैं कि हम ही भगवान हैं। अहम ब्र्स्मास्मि । जो वेदों में है, कहकर, हमें अपने आप को जानने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। और ध्यान मार्ग में 'श्वास पर ध्यान' का मार्ग बोध करते हैं।

10.पहले प्रकार गुरूओं का कहना है कि अगर हमें मुक्ति पाना है, हमें भगवान का आश्रय लेना और उनका अनुग्रह पाना है।

लेकिन दूसरा प्रकार के गुरूओं का कहना है कि अगर मुक्ति पाना है

, तब आपको जानना है कि खुद भगवान हो। मतलब अहम् ब्र्मास्मि का सच्चाई जानना चाहिए । वही है श्वास पर ध्यास , ध्यान मार्ग, हमें जो बोध करते हैं।

11. पहले प्रकार के गुरुओं हमें बोधों करते हैं। और दूसरे प्रकार के गुरुओं हमें ध्यान साधना करने को कहते हैं ।

12.पहले प्रकार का गुरुओं को आश्रय लेने वाले लोगों को अज्ञानता नहीं जाता है। उनको बहुत विषयों का समझ नहीं होता है ।

लेकिन दूसरा प्रकार के गुरुओं को आश्रय लेने वाला लोग को अज्ञानता से बाहर निकलते हैं, ज्ञान प्राप्त करते हैं, और बहुत सारे विषयों को समझ पाते हैं ।

13. पहले प्रकार के गुरुओं ने अशाश्वत विषयों के बारे में ही बोध करते हैं । लेकिन दूसरा प्रकार के गुरुओं ने सिर्फ शाश्वत विषयों के बारे में ही बोध करते हैं ।

14.पहले वाले गुरुओं ने सिर्फ दिखने वाले विषयों पर ही बोध करते हैं। लेकिन दूसरा प्रकार के गुरुओं ने नहीं दिखने वाला विषयों पर भी बोध करते हैं ।

15.पहले प्रकार के गुरु आपको सिर्फ शरीर मानते हैं और शरीर संबंधित विषयों पर ही बात करते हैं।

दूसरे प्रकार के गुरुओं ने कहते हैं कि आप शरीर नहीं है, आप आत्मा हो। और उसी प्रकार इस पर प्रमुखता देने के लिए कहते हैं। आत्मा संबंधित विषयों के बारे में ही बात करते हैं ।

16. पहले प्रकार का गुरुओं ने सब अलग-अलग कहकर, समझाते हैं। लेकिन दूसरे प्रकार के गुरुओं ने सब एक है कहकर समझाते हैं ।

17. पहले प्रकार के गुरुओं कहते हैं कि भगवान अलग कहीं और है। दूसरे प्रकार के गुरुओं कहते हैं कि सब भगवान के स्वरूप हैं, और कहते हैं कि सबके अंदर भगवान है। 'सर्वम खल्विदम ब्र्म्हा' वेदों का वाक्य ही कहते हैं।

18. पहले प्रकार गुरुओं ने प्रापंचिक सेवा, मतलब शरीर संबंधित सेवा करने को कहते हैं, और पुण्य कार्य करने को कहते हैं। लेकिन दूसरा प्रकार के गुरुओं ने आध्यात्मिक सेवा, मतलब आत्म सेवा करने को कहते हैं।

19. पहले प्रकार के गुरुओं को आश्रय लेने वाले लोग प्रारंभ जन्मों में है । लेकिन दूसरे प्रकार के गुरुओं को आश्रय लेने वाले लोग आखिरी जन्मों में है ।

20.एक प्रकार से कह सकते हैं कि पहले प्रकार के गुरुओं को आश्रय करने वाले लोगों को दूसरे प्रकार का गुरुओं को आश्रय करने वाले लोगों की स्थाई पहुंचने के लिए लगभग 250 से 300 जन्म लेने पड़ेंगे।

21.अगर हम देखेंगे पहले प्रकार का गुरुओं को अनुसार करने वालों को दूसरे प्रकार गुरुओं को समझ नहीं सकता और ना ही मानते हैं ।

इसी प्रकार दूसरे प्रकार के गुरुओं को अनुसार करने वालों को पहले प्रकार गुरुओं का बोध अच्छा नहीं लगता है ।

इसलिए गुरु का महानता, कितना शिष्य है, या, उनके बातों पर आधारित नहीं है । उसका साधना करने, करवाने पर और बोध करता हुआ ज्ञान पर आधारित है । और किस साधना से शिष्यों, अपने दुख से निकलेंगे, उस पर भी आधारित है। इसलिए जानिए कि, एक गुरु का शक्ति, उसका दिया हुआ साधना और बोध किया हुआ ज्ञान पर ही आधारित है।

तब हमें कैसे मालूम कौन सा महान साधना है?

जिस साधना से आपके अंदर से गलत लक्षणों, गलत कर्मों, गलत खाना, गलत बातों, और गलत सोच विचार और गलत आदतें, और वासनाओं से मुक्त होंगे, और आपके व्यवहार में अच्छा बदलाव लाता है, और पवित्र हो सकते हैं, वैसे साधना महान है।

साधना करने वालों में अगर बदलाव नहीं लाता है, वह महान साधना नहीं है। और दूसरे गुरुओं को ढूंढना चाहिए ।

लेकिन उतना महान साधना हमें सबको ब्र्मर्षि श्री पत्री जी दिया है। वह है 'श्वास पर ध्यास'- ध्यान । अगर विशेष ध्यान करेंगे, यह सब बदलाव हम देख सकते हैं ।

इसलिए जानिए कि जो आत्मा ज्ञान बोध करता है, वही महान गुरु होते हैं। अगर ऐसे गुरु को अनुसार कर सकते हो, आपका जीवन धन्य हो जाएगा। इसलिए ऐसे गुरु को चुनिए।

जैसे हम जब दूध निकालते हैं, अगर नीचे कुछ बर्तन को नहीं रखते हैं, सारा दूध बेकार हो जाते हैं। वैसे ही जब गुरु बोध करता है, अपना मन नहीं लगाएंगे तब, वह बोध भी बेकार हो जाता है।

शिष्य का अर्थ ?

शिष्यों दो प्रकार के होते हैं 1.ज्ञान को चाहने वाले, 2.मोक्ष चाहने वाले

मधुमक्खी एक पुष्प का निकला हुआ मधु से संतुष्ट नहीं होती है। अनेक पुष्पों का मधु पीती है। जब तक अच्छा मधु नहीं मिलता है, और पेट नहीं भरता है, तब तक वह दूसरे फूलों को तलाश करते हैं।

वैसे ही ज्ञान चाहने वाला शिष्य को एक गुरु से संतुष्ट नहीं होता, जब तक उनका ज्ञान के प्यास खत्म नहीं होता, तब तक दूसरों गुरुओं का दर्शन करता है। और सेवा करता है। आखिर अपना पसंद का गुरु जब मिलता है, उसको सर्व समर्पन कर कर सिर्फ उसी को गुरु को समझ कर रहता है। उसी पर समर्पित भाव हो जाता है। जब तक सदगुरु न मिलता है ऐसे ही वह ढूंढता रहता है।

जिज्ञासी और गुणवान शिष्य लोग, सिर्फ ज्ञानी लोग को ही गुरु मानते हैं। सब दिखने वालों को नमस्कार नहीं करते हैं। गुरु का वेश और भाषा के आधार नहीं, बल्कि उसका संस्कार, प्रज्ञा को समझने का शक्ति, जिज्ञासी और गुणवान शिष्यों को होते हैं।

शिष्यों का अर्हताओं :-

सद्गुरु, शिष्यों को स्वीकारने से पहले, उनका गुणगान, सच्चीलता, स्वभावों, प्रवर्तन, अनुशासन, और संस्कार, यह सब देखकर ही स्वीकारता हैं।

जो आत्मा स्तुति करते हैं, दूसरों को विमर्श करने वाले को, निंदा करने वालों को, पाप करने वालों को, भगवान का चिंतन नहीं रखने वालों का, और आध्यात्मिक अवगाहन न होने वालों को, कम बुद्धि वालों को, ज़िद्दी या मूर्ख लोगों को, व्यसन पर लोगों को, कृतज्ञता नहीं होने वालों को,

आचारों और सत्प्रवर्तन नहीं होने वालों को, गुरूओं उनको शिष्य नहीं बनाते हैं, और ऐसे लोग शिष्य बनने का अर्हत भी नहीं है ।

इसी प्रकार जो अपना कर्म नहीं करने वाले, क्षमता को नहीं होने वालों, बिना अवसर पर बहस करने वालों, लोभी गुण होने वालों को, कामुक लोगों को, क्रोधित लोगों को, हिंसा प्रवृत्ति के लोगों को, मूर्ख लोगों को सद्गुरु उन्हें शिष्य नहीं स्वीकारते हैं ।

स्वधर्म नहीं पालन करने वालों को, ध्यान कांक्षा नहीं होने वालों को, नैतिक प्रवर्तन ना होने वालों को, पाप भीत नहीं होने वालों को, सद्गुरु उन्हें शिष्य नहीं स्वीकारते हैं ।

इसलिए ज्यादा विवेक और विचक्षण, एक शिक्षक को ही दिखाना चाहिए। एक प्रकार से, गुरु को चुनना मुश्किल काम है। एक तरफ सद्गुरु, शिष्यों के अंदाज के ऊपर, और बुद्धि शक्ति, से भी परे हैं। कोई भी समझ नहीं सकते है। पूर्व जन्म शुक्रता से,और इस जन्म का पुण्य के बल पर सद्गुरु प्राप्त होता है ।

शिष्यों का प्रवर्तनः-

शिष्य को सद्गुरु प्राप्त होने के बाद, गुरु को छोड़ना नहीं, शिष्य को अपने गुरु को अपमान नहीं करना, अगर गुरु से ज्यादा शक्ति भी मिले, शिष्य को याद रखना है कि, वह अनन्य गुरु भक्ति के वजह से मिला है। अहंकार नहीं होना चाहिए। अगर ऐसे नहीं करेंगे तो परिपूर्णता नहीं मिलेगा।

शिष्य जितना भी विवेक है, पंडित है, बड़ा नाम है, गुरु के बाद ही आता है। एक गुरु शिष्य को कभी प्रशंसा नहीं करता है, वह कभी शिष्य को नहीं कहता है कि शिष्य महान है, बड़ा ज्ञानी है, सबसे उत्तम है, आदि । एक शिष्य अपना साधना करते हुए, उन्नति प्राप्त कर कर, विनम्र रहते हुए ही जीना है। ना कि अहंकार से, क्योंकि जितना भी जानो, गुरु से और

सीखने को रहता है।

शिष्य समझता है कि वह बढ़ रहा है। लेकिन उसे १० गुना गुरु बढ़ता रहता है। ज्यादा अभिमान, प्रशंसा, शिष्य का उन्नति के लिए अवरोध है, एक गुरु को मालूम है ।

अपने सपनों में भी गुरु का कमियों को देखना नहीं चाहिए। गुरु के बाद ही शिष्य है, यह विषय याद रखना चाहिए। जब तक जिंदा है, शक्ति देने वाला और रोशनी देने वाला गुरु ही है। यह बात विश्वास करना है। अगर गुरु को निर्लक्ष्य करेंगे, तब कोई भी पतन हो जाएंगे।

गुरु के समक्ष में विनय विधेय प्रदर्शन करना चाहिए। कभी भी झूठ नहीं बोलना है। उसके सन्निधि में असहनता और अइष्टता नहीं दिखाना है। गुरु के सामने, ऊपर नहीं बैठना चाहिए। शिष्य, गुरु से छोटा है, और एक विद्यार्थी के भाव में रहना है ।

गुरु के सामने बेकार से अपना जुबान नहीं खोलना, बहस नहीं करना, अपनी होशियारी नहीं दिखाना। आपको जानकारी से ज्यादा गुरु को मालूम होगा और अलग हो सकता है क्योंकि उसमें उनका अनुभव भी होता है। गुरु को अपने चर्चा में जीतने का और अपमान नहीं करना है। अगर एक शिष्य अपना उच्चता प्रदर्शित करता है, अगला जन्म में कठोर और क्रूर जन्म बिताना पड़ेगा ।

मानव का तीन प्रकार का श्राप, ॠषि श्राप, नाग श्राप, और देव श्राप से रक्षा करने वाला, सिर्फ गुरु ही है। अगर मन्नत को नहीं चुकाएंगे, उस हिसाब से भी रक्षा करने वाला गुरु ही है ।

ऐसे गुरु को जो अपमान करेगा और नीचापन दिखाएगा, घोर से पतन हो जाएगा, भ्रष्ट हो जाएगा । इसलिए सत्प्रवर्तन से गुरु को प्राप्त करना है। विद्यार्थी ही नहीं बनना, बल्कि एक शिष्य बनना चाहिए ।

गुरुओं का क्रोध ।

स्लोकाः **कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ।**

स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत ।। (भा.गी.4-18)

तात्पर्य :- जो मानव, कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्म, देख सकता है, तो वह सबसे बुद्धिमान है। वही योगी बनता है। सकल कर्मो को आचरण करने वाला है।

क्योंकि सब चीज के लिए मन ही प्रधान है, जो कर्म करने वाला और नहीं करने वाला, उनके भाव के प्रतिफल मिलता है, ना कि अपना किया हुआ कर्म का। यही विषय श्री कृष्ण भगवान, ऊपर श्लोक में कहते हैं। बहुत लोगों को यह विषय समझ नहीं आता, और काम को देखते हैं। लेकिन उसका पीछे भाव नहीं ग्रहण कर सकते हैं। महान योगेश्वर जैसे श्री कृष्ण परमात्मा का यह बातें समझना सामान्य मानव को मुश्किल है।

एक उदाहरण देखते हैं:-

दो साधु लोग जंगल में गुजरते हुए, उनके रास्ते में एक नदी आता है। वहां पर एक स्त्री, नदी पार करने केलिए खड़ी होती है। इन साधुओं को देखते ही, वह उनसे मदद मांगती है, उसको नदी पार करने के लिए। तब एक साधु उसको उठाकर नदी को पार करवाता है ।

बाद में अपने-अपने रास्ते में चले जाते हैं। कुछ देर बाद, दूसरा साधु पूछता है, पहले साधु से, कि, एक स्त्री को छूकर तुमने अपराध किया है। तब पहले साधु कहता है कि हमने बहुत क्रोश दूरी चले आए हैं, तुमने अभी भी उसको उठाकर लेकर आ रहे हो क्या? मैंने तो वहीं छोड़ दिया । आश्चर्य से पूछता है । यहां हमें समझने की बात यह है कि जबकि दूसरा साधू स्त्री को नहीं छुआ, मन में उस भाव को रखने से, दो क्रोश दूर चले

जाने पर भी उसको भूल नहीं पाया। और जबकि भौतिक प्रकार से वह कर्म नहीं किया, फिर भी वह कर्म करने वाला हो गया है।

जबकि पहले साधु स्त्री को छुआ, मन में कुछ भी भाव नहीं रखने पर, कर्म करने पर भी, वह कर्म नहीं करने वाला हो गया है। इसलिए भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कर्म में अकर्म, क्यों कि कर्म करें और मन में शुद्ध भाव रखते हैं, पहले साधु ही योगी कहलाता है ।

इसी प्रकार बहुत लोग पत्री जी को देखकर कहते हैं कि,वह भगवान कहते हैं अपने आप को, और उसको इतना क्रोध है। कुछ लोग अंदर-अंदर कहते हैं। उनके पास रहने वाले लोगों को भी समझ नहीं आता है ।

उनका क्रोध यह लोगों को गलत शब्दों पर है, गलत कर्मों पर है, उनके ऊपर नहीं है। उसका भाव है उनका जीवन सुधारने का, उनके गुण को ठीक करने के लिए। उनके ऊपर वैर करना नहीं है, क्योंकि उनको ना कोई शत्रु है ना कोई मित्र है। जबकि वह कर्म करते हुए दिखता है वह अकर्मी है, मतलब कर्म नहीं करने वाला है ।

इसके साथ उसका भाव यही है कि, जो भी उनके पास आता है वह सिर्फ ज्ञान प्राप्त के लिए ही है। ऐसे लोगों को कोई भी गुरु , उन लोगों के अहंकार निकालने का प्रयत्न करता है। उनके अहंकार स्थिति के प्रति उसका क्रोध होता है। कभी-कभी चिड़चिड़ाता हैं, कभी उसको ध्यान नहीं देता है, कभी किसी से प्यार से बात करता है, किसी को झप्पी देता है, किसी को थप्पड़ पड़ता है । कई प्रकार का उसका प्रवर्तन होता है ।

इसलिए गुरु का प्रवर्तन एक प्रकार का नहीं होता है। शिष्य के आधार पर होता है। कोई भी गुरु शिष्य में अहंकार को निकालकर और उनको ज्ञानी बनाने का प्रयत्न करता है। वही पत्री जी का प्रयास है, और उद्देश्य भी है। इसलिए जबकि वह कर्म करते हैं वह अकर्मी है, कोई भी कर्म

उसको नहीं छूता है। श्री कृष्ण भगवान ने भी यही कहा है। इतना महान योगी ब्रह्मर्षि पत्री जी को सामान्य लोग कैसे समझेंगे ?

अगर आप सोने के दुकान में जाकर, बैंगन पूछने से कैसे होगा? इसी प्रकार एक ब्र्म्ह ज्ञानी पत्री जी के पास जाकर, उनसे ज्ञान मांगने के अलावा, मेरा बेटा का नौकरी हो जाएगा या नहीं? क्या मेरी बेटी की शादी हो जाएगी? क्या मेरे कमर के दर्द कम हो जाएगा य नहीं ? ऐसे पूछने से क्या मतलब ? उनको बहुत कम समझ रहे हैं।

पत्री जी का क्रोध समझने के लिए, असंगत्व क्या है, का मतलब जानना चाहिए। श्री कृष्ण परमात्मा जो कहते हैं, समझना चाहिए। ध्यान कर कर अपना स्थाई को बढ़ाना चाहिए। बेकार में गुरु को विमर्श नहीं करना है। उनको गलत नहीं समझना है। पहले, एक शिष्य को, अपना जीवन ठीक करना चाहिए ।

अनुबंध ।

पत्रीजी का संदेशों ।

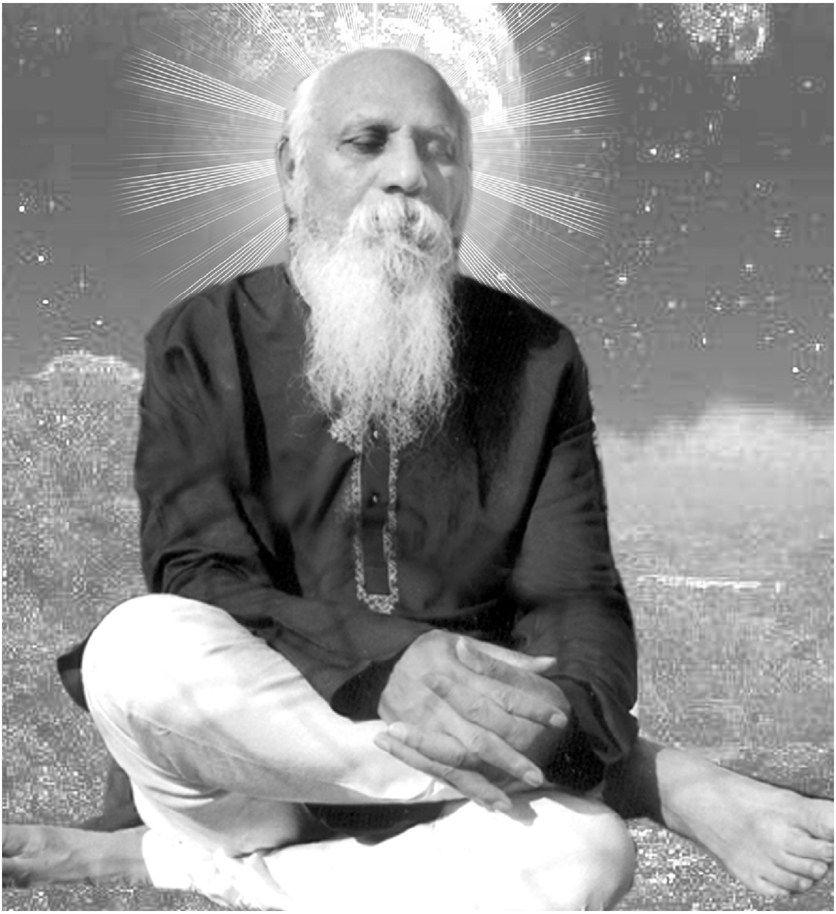

गुरुओं हर वक्त रहते हैं ।

'बताने वाले हर वक्त रहते हैं, सिर्फ सुनने वाला नहीं है' - कहते हैं श्री सदानंद योगी ।

शिष्य जब सही स्थिति में है, गुरुओं जरूर आते हैं, भौतिक रूप में या सूक्ष्म शरीर में।

इसलिए, 'हम सही स्थिति में हैं या नहीं' - हमें समय समय पर अपने आप को परीक्षा करना चाहिए। क्यों कि हमें समझ नहीं आएगा, जबकि गुरु अपने घर में रहते हुए भी ।

प्रापंचिक शिष्यों को, कुचित्तों को ,
धोखा देने वाले गुरुओं ही मिलेगा ।

मोक्ष अर्हत शिष्यों को
मोक्ष प्राप्ति हुई गुरुओं ही मिलते हैं ।

गुरु और लघु

‘गुरु’ का मतलब ‘वजन’ रहने वाला।

मतलब ‘ज्ञान’ से ‘अनुभव’ से वजन भरा हुआ है। ‘गुरु’ का विपरीत अर्थ शब्द है ‘लघु’ ।

‘लघु’ मतलब ‘हल्का रहने वाला’ ;

मतलब बिना कुछ ‘ज्ञान’ और बिना ‘अनुभव’ से हल्के रहने वाला।

‘गुरु’, ‘शिष्य’ के शब्दों में

ज्यादातर अर्थ यही होता है कि ‘सिखाने वाला’ और ‘सीखने वाला’। मगर, ‘गुरु’ का मतलब ‘सिखाने वाला’ नहीं;

‘शिष्य’ का मतलब ‘सीखने वाला’ नहीं है!

असलियत यह है कि, कोई भी किसी और को सिखा नहीं सकता है।

लेकिन, खुद अपने आप, साधना कार्यक्रमों से शिक्षकों को देखकर उनसे सीख सकते हैं। ‘लघु’ अपना साधना कार्यक्रमों से ‘गुरु’ बन जाते हैं।

इसलिए जानना जरूरी है कि, ‘गुरु’ का मतलब बोधक नहीं है। ‘गुरु’ का अर्थ, जो ‘अपने साधना से सिद्ध होने वाला है’ । जब यह समझ आएगा, ‘गुरु’ कह कर एक ‘व्यक्ति’ के पीछे नहीं दौड़ेंगे; ‘साधना’ कार्यक्रमों के पीछे पड़ना शुरू होगा !

आध्यात्मिक शास्त्र अध्ययन द्वारा, योग साधना द्वारा,

‘लघुओं’ धीरे-धीरे ‘गुरुओं’ बन जाते हैं ।

‘अंध भक्त – शिष्य’

‘भक्ति’ हर वक्त बाहरी कर्मों में लीन हो जाता है। मतलब पूजा, अभिषेक, अर्चना ......आदि विषयों में बह जाता है। भयभीत रहने वाला ही भक्त है।

थोड़ा बेहतर होने से भक्त मंत्र अनुष्ठान करता रहता है। लेकिन

कोई भी भक्त, जिज्ञासु या ज्ञान पिपासी, बनने को तैयार नहीं होता है।

‘पाहिमाम ! पाहिमाम’ कहकर, एक भक्त चिल्लाता रहता है। उनके बराबर में हर वक्त उसको आपदाएं ही दिखते है ।

एक भक्त गुरुओं को, और परम गुरुओं को, भगवान के ‘अवतारों’ समझकर याद करता रहता है ।

कोई भी भक्त, खुद भी उनके तरह बन सकता है या बनना चाहता है, यह सोच नहीं रखता है। लेकिन, एक ‘शिष्य’ खुद भी गुरुओं जैसा, या परम गुरुओं जैसा बन सकता है, का समझ लेकर, ‘वह लोगों परमगुरूओं बनें हैं, तो मैं भी उनके तरह बन सकता हूं’, का समझ लेकर, कठोर दीक्षा से ध्यान शुरू करता है ।एक शिष्य भय को अपने नियंत्रण में रखता है; ‘पाहिमाम, पाहिमाम’ कह कर नहीं चिल्लाता है; आपदाओं को परवाह नहीं करता है। यही होता है जिज्ञासु धीरे-धीरे यही मुमुक्षु बन जाता है। मुमुक्षु मतलब कठोर ध्यान करने वाला है।

अंध भक्ति से कुछ फायदा नहीं है; जो है वह भी नष्ट हो जाएगा; अभी कर्तव्य यही है कि ‘शिष्य’ बन जाना चाहिए।

'गुरु – परम गुरु'

आज का शिष्य ही, कल का गुरु है।

'गुरु' का मतलब 'वजन से रहने वाला' – 'ज्ञान' न से भरा हुआ।

आज का मुमुक्षु ही कल का मुक्ति पुरुष, गुरु है। ध्यान द्वारा दिव्य चक्षु को प्राप्त कर कर, आत्मज्ञान पाने वाला ही, 'गुरु' है ।

इसी प्रकार आज का गुरु ही कल का परम गुरु है।

'परम गुरु' का मतलब बहुत-बहुत वजन रहने वाला है – मतलब ब्र्म्ह ज्ञान से भरा हुआ है। आज का ऋषि, कल का राजर्षि, परसों का ब्र्म्हर्षि बन जाता है।

दिव्य चक्षु पाने वाला है गुरु और ऋषि।

दिव्य चक्षु को संपूर्णता से संपूर्ण परिपक्व करने वाला ही परम गुरु, राजर्षि और ब्र्म्हर्षि हैं।

श्री तटवर्ती वीरा राघवराव का हिन्दी किताब

1) आत्म शास्त्र । Rs.200/-
2) ध्यान विद्या । Rs.160/-
3) भगवद् गीता का सार ।......................Rs.160/-
4) एक और जन्म । Rs.160/-
5) सत्य मार्ग ।....................................Rs.160/-
6) ‘गाइडिंग’ ध्यान क्यों नही ? Rs.120/-
7) भगवान कौन हैं। Rs.120/-
8) कर्म सिद्धांत । Rs.120/-
9) विज्ञान का अर्थ - निहितार्थ Rs.120/-
10) मरने से पहले मरना है। Rs.130/-
11) ब्रह्म ज्ञान। Rs.100/-
12) यह जीवन क्यों हैं ? Rs.100/-
13) मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।.. Rs.80/-
14) भागवत के दृश्यों का अर्थ..................... Rs.80/-
15) दुख निवारण का मार्ग.......................... Rs.75/-
16) आर्थिक स्थिति बढ़ाना है तो ? Rs.60/-
17) सत्य Rs.50/-
18) क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं? Rs.50/-
19) गुरु को पहचानना कैसे ? Rs.50/-

For Books Please Contact :
TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812

उत्तम गुरुओं का अर्हतायें ।

मुमुक्षु लोग सागर में मोती के सीप जैसे लोग हैं और गुरु उनमें उस सीप में प्रवेश करने वाला, स्वाति नक्षत्र का बारिश का बूंद जैसा है। बारिश के एक बूंद से प्यास बुझता है। लेकिन समुद्र का नमकीन पानी से क्या फायदा ? इसलिए गुरु बारिश का पानी जैसा है। गुरु, गुण और रूप रहित परब्र्ह्म के स्वरूप हैं। अज्ञान अंधकार को मिटाकर, ज्ञान प्रसाधित करते हैं।

गुरु ज्ञानी होना चाहिए, गुरु कर्मिष्ठा होना चाहिए, और गुरु ध्यान तत्परइत योगी होना चाहिए। गुरु स्वयं साधक होना चाहिए। साधना में कष्ट और सुख का अनुभव करने वाला होना चाहिए। ब्र्ह्मानुभूति का अनुभव कर लिया होना चाहिए। प्रज्ञाशाली भी होना चाहिए। सिर्फ ऐसे गुरु ही, दूसरों को मार्गदर्शन कर सकता है और दूसरों को अच्छा रास्ता दिखा सकता है।

Rs.50/-